UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 6.125

ISSN : 0976-6650

शोध दृष्टि

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 14, No. 1.1 January, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

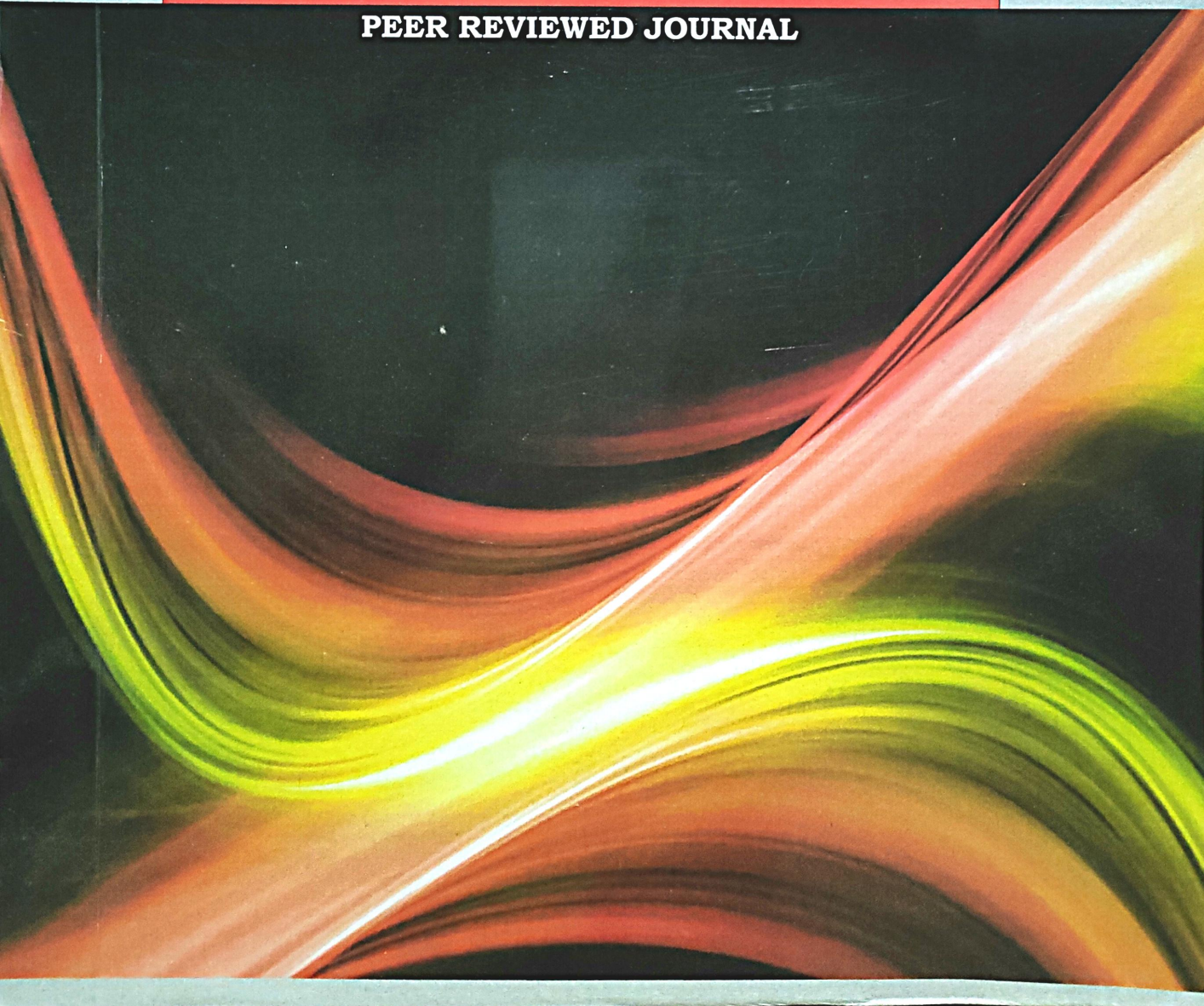

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 14, No. 1.1 Year - 14 January, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

६	प्रभा खेतान के उपन्यासों मे विविध मूल्यों का चित्रण कल्पना यादव	151-154
६	Moorthy's Quest for Freedom and Empowerment in Raja Rao's *Kanthapura* **Dr. Ekta Sharma**	155-157
६	उत्तर भारतीय संगीत वाद्यों का विकासक्रम और वर्गभेद : तंत्र वाद्यों के परिप्रेक्ष्य में डॉ० हंस प्रभाकर रविदास	158-160
६	शिवपुराण की महापुराण विरूद की समस्या **पीयूष मिश्र**	161-165
६	पर्यावरण और महात्मा गाँधी का नजरिया **श्याम सुन्दर**	166-168
६	नारी मुक्ति की अवधारणा और सामाजिक विडम्बना : विशेष संदर्भ कहानीकार स्वयं प्रकाश **रश्मि निषाद**	169-172
६	भट्टोजिदीक्षिताभिमतकौण्डभट्टाभिमताधिकरणसप्तम्यर्थविमर्शः **वाचस्पतिः डॉ0 दिव्यचेतनब्रह्मचारी**	173-175
६	'गोदान' में गाँव और शहर की अन्तःसम्बद्धता **परिमल प्रधान**	176-178
६	स्त्री विमर्श में लेखन की परंपरा, अतीत और उनके संघर्ष **डॉ0 आलोक कुमार**	179-184
६	Atmanirbhar Bharat Mission: Envisioning a Sustainable Development Approach **Dr. Niraj Kumar Singh & Dr. Pankaj Singh**	185-192
६	भारतीय कला में महिला कलाकारों की एक मजबूत पक्ष– चित्रकार गोगी सरोजपाल **राजीव कुमार गुप्ता**	193-196
६	अपां स्रष्टेत्यत्रसमासनिषेधे दीक्षितजयादित्यमतभेदविमर्शः **डॉ0 यदुवीरस्वरूपशास्त्री**	197-199
६	हिंदी जगत और डिजिटल साहित्य **संदीप प्रसाद**	200-204
६	मुर्दहिया और लोकजीवक **डॉ0 नीतू वर्मा**	205-208
६	T.C. Kamla Dasgupta **Dr. Susmita Nandi**	209-210
६	Alkazi Foundation's Contribution for Contemporary Photographers **Krishna Singh**	211-214
६	An Analysis of Equity Participation by National Housing Bank **Dr. Shweta Khemka**	215-220
६	दलित जीवन का यथार्थ और 'बलचनमा' **प्रतिभा सिंह**	221-225
६	The Indian Diaspora: Uniting Cultures, Connecting Worlds **Dr. Nidhi Rani Singh & Dr. Gunjan Sachdeva**	226-230

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 14, No. 1.1, January 2023 ISSN : 0976-6650

हिंदी जगत और डिजिटल साहित्य

संदीप प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सिटी कॉलेज, कोलकाता

इस बात में जरा भी संदेह नहीं है कि आज हम एक डिजिटल संसार के निवासी हैं। डिजिटल साहित्य जिस पारिस्थितिकी (इकोसिस्टम) का अभिन्न हिस्सा है, उसे अभी बहुत दूर तलक जाना है। आज हमारे सामने डिजिटल रूप में जो साहित्य मौजूद है उसमें डिजिटल साहित्य, साइबर साहित्य, हाइपर साहित्य[1], मल्टीमीडिया साहित्य, ई पुस्तकें (ई बुक्स), ऑडियो बुक आदि शामिल है। यह सारी सामग्रियाँ वेबसाइट्स, ब्लॉग, माइक्रोब्लॉगिंग सोशल साइट्स, ई-मैग्जीन, ई-जर्नल, ई-पोर्टल, ई-फोरम आदि में बिखरी पड़ी है। भाषा एवं साहित्य की बात करें तो डिजिटल साहित्य को दो रुपों में देखा जा सकता है। पहला पूर्व उपलब्ध साहित्य का ही सॉफ्ट या डिजिटल संस्करण और दूसरा पूरी तरह से इलेक्ट्रानिक उपकरणों पर तैयार किया गया साहित्य, जिनका प्रकाशन ई-सामग्री (कन्टेंट) के रूप में हुआ है। यह सामग्रियाँ ऑनलाईन उपलब्ध होती हैं और इन्हें इंटरनेट ब्राउजर्स के माध्यम से खोजा, पढ़ा, सुना, देखा अथवा डाउनलोड किया जाता है। यहाँ ऑनलाईन शब्द का तातपर्य किसी कम्प्यूटर का एक या एक से अधिक कम्प्यूटर या नेटवर्क से इंटरनेट के माध्यम से जुड़ा होना होता है।[2] अर्थात डिजिटल साहित्य भी अन्य डिजिटल सूचनाओं और सेवाओं की तरह इंटरनेट पर आश्रृत है। गौरतलब है कि इंटरनेट की एक कीमत है। अन्य सामग्रियों की तरह डिजिटल साहित्य मुफ्त (फ्री) डाउनलोड उपलब्ध हो तो भी उसके लिए इंटरनेट चाहिए, जो मुफ्त नहीं है; कम से कम अब तक तो नहीं। वैसे, इस डिजिटल दौर के पहले भी किताबें मुफ्त नहीं थीं। पर इतना अवश्य है कि साहित्य के डिजिटल संस्करण की लागत और कीमत निश्चित तौर पर पहले की पेपरबैक और हार्डबाउण्ड मुद्रित साहित्य से कम होती है।

मुद्रित किताबें और साहित्य औद्योगिक क्रांति की देन है जबकि वर्तमान दौर डिजिटल क्रांति का है। डिजिटल क्रांति को तीसरी औद्योगिक क्रांति भी कहा जाता है। पश्चिम की तुलना में भारत में डिजिटल क्रांति थोड़ी देर से हुई। भारत की डिजिटल क्रांति के संदर्भ में दो घटनाएँ सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण साबित हुई हैं। पहली घटना, जिसने भारत में डिजिटलाइजेशन की जमीन तैयार की. वह है 1991 ई. में भारत में उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण (LPG) की नीति का लागू होना। इस नीति के लागू होने के बाद भारतीय बाजार का द्वार खुल गया। निजी कंपनियाँ भारत में अपने उत्पादों, उत्पादन संयंत्रों और विदेशी प्रौद्योगिकी के साथ भारत में दाखिल हुईं। इन सब का असर यह हुआ कि भारत में सूचना और प्रौद्योगिकी की पारिस्थितिकी तैयार हुई। भारत में मध्यवर्ग का जीवन स्तर बढ़ा। शहरीकरण की प्रक्रिया तेज हुई। सामरिक (डिफेंस) क्षेत्र में इस्तेमाल होने वाली तकनीकें धीरे-धीरे सार्वजनिक क्षेत्र में शामिल हुईं। 90 के दशक में लैंडलाइन फोन लोगों तक पहुँचा। रेडियो की जगह दूरदर्शन ने ले लिया। नई सदी में दाखिल होने के समय दुनिया मुट्ठी में कर लेने के जज्बे के साथ लोगों के जीवन में मोबाइल फोन दाखिल हुआ। कीबोर्ड से टचस्क्रीन तक आते-आते मोबाइल फोन ने कई चेहरे बदले। इंटरनेट और नेटवर्क के लिए 2G, 3G, 4G और 5G की यात्रा की कहानी हम सबको पता है। इसके बाद दूसरी घटना, जिसने डिजिटलाइजेशन को हमारी जरूरत बना दी, वह है कोविड-19 महामारी के कारण विश्वव्यापी लॉकडाउन। लगभग दो साल के लॉकडाउन ने दुनिया के तौर-तरीकों को बदल कर रख दिया। सरकारें जिस डिजिटलाइजेशन के प्रचार-प्रसार के लिए काफी समय से कोशिशें करती आ रही थीं वह अब जरूरत बन गई। अब तक जो लोग यथास्थितिवाद एवं अपने पूर्वग्रहों के कारण डिजिटल जगत से दूरी बनाकर रखे हुए थें, उन्हें भी इसका हिस्सा बनना पड़ा। कारण यह था कि अब डिजिटलाइजेशन का दायरा मनोरंजन, तकनीक एवं विलासिता से आगे बढ़कर आमजन के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन की जरूरतों तक पहुँच गया। लॉकडाउन ने दुनिया को बंद किया तो दुनियाँ नें डिजिटलाइजेशन का दरवाजा खोल लिया। परिणाम स्वरूप आभासी जगत अब वास्तविक जगत का परिपूरक बन गया।

हम अगर ठीक से देखें तो विज्ञान की तरक्की के साथ यांत्रिकता, तकनीक, सूचना, इंटरनेट आदि के जरिए मानव ने एक डिजिटल सूक्ष्म संसार का गठन कर लिया है। इस डिजिटल दुनिया की इकाई डिजिट है। जो चीजें हमारे स्थूल संसार में भौतिक अस्तित्व रखती हैं वही चीजें डिजिटल संसार में अपना भौतिक अस्तित्व खोकर डिजिट में तब्दील हो जाती हैं। डिजिटल संसार में हम भौतिक चीजों के होने का आभास जरूर प्राप्त कर लेते हैं लेकिन असलियत में वो डिजिट होता है। इस डिजिट को हम तकनीकी भाषा में बाईनरी के रूप में समझ सकते हैं। उदाहरण के रूप में जब हम किसी डिजिटल उपकरण में तस्वीर देखते हैं तो हमें वह तस्वीर कागज पर छपी हुई तस्वीर की तरह दिखाई तो पड़ती है लेकिन असलियत में वह एक जटिल डिजिटल संरचना होती है। डिजिटल संसार में दिखने वाले अंक, शब्द, रंग, ध्वनि, चित्र, चलचित्र सब कुछ जटिल डिजिटल संरचना होती है। आज हमारा वास्तविक संसार और यह डिजिटल आभासी संसार एक दूसरे की जरूरत बनकर एक दूसरे में घुल-मिल गया है। कई बार हम वास्तविक चीजों को डिजिट में बदलकर और डिजिटल चीजों को वास्तविक चीजों में बदलकर काम लेते हैं। जैसे बैंकिंग के दौरान ऑनलाइन ट्रांजैक्शन के मामले में हम सिर्फ डिजिट को एक खाते से दूसरे खाते में अंतरण (ट्रांसफर) करते हैं। लेकिन यह डिजिटल ट्रांसफर को वास्तविक ट्रांसफर के समान ही समझा जाता है क्योंकि हम बैंक जाकर उस डिजिट को असली मुद्रा में प्राप्त कर सकते हैं। डिजिटल मार्केटिंग में हम अपने खाते में मौजूद मुद्रा के डिजिट का ट्रांसफर करके असली चीजों को खरीद पाते हैं। कहने का मतलब है कि आज हम जिस संसार में रहते हैं यह भौतिक और डिजिटल आयामों का मिश्रित संसार है। यह डिजिटल सूक्ष्म संसार अनंत संभावनाओं एवं शक्तियों से भरा हुआ है और इसने भौतिक संसार की हदों से बाहर आकर कर्म एवं अनुभव पाने की सहूलियत प्रदान की है।

डिजिटलाइजेशन के दौर में हिंदी साहित्य एवं सामग्रियों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई है। यह उपस्थिति मुख्यतः चार तरीकों से बनी है-

- पहला डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री का विकास,
- दूसरा डिजिटल कार्यक्रमों या सॉफ्टवेयरों द्वारा हिंदी प्रशिक्षण,
- तीसरा डिजिटल हिंदी माध्यम से अन्य विषयों का प्रकाशन और
- चौथा हिंदी के भाषिक टूल्स का विकास।[3]

उल्लिखित चारों तरीकों ने डिजिटल दौर में हिंदी को गति देने का काम किया है। वेब मीडिया में हिंदी का विकास सन 2003 में यूनिकोड (जो सन् 2000 में आया) के आने के बाद हुआ। 2003 में हिंदी में इन्टरनेट सर्च और ईमेल की सुविधा की शुरुआत हुई। देखा जाए तो हिंदी के विकास में यह एक मील का पत्थर साबित हुआ।[4]

आज की तारीख में आम आदमी को कोई भी जानकारी चाहिए तो वह उसे सबसे पहले इंटरनेट पर खोजता है। आज का पाठक चाहता है कि सारी चीजें उसे इंटरनेट पर आसानी से मिल जाए। डिजिटल मार्केटिंग वेबसाइट्स ने ऐसी सुविधा प्रदान की है कि हमारी जरूरत की सारी चीजों, जिसमें पुस्तकें भी शामिल हैं, को हम इंटरनेट पर खोज कर उसे इंटरनेट पर ही खरीद कर सीधे घर मँगा सकते हैं। खरीद कर घर मंगाने मे भी समय खर्च होता है। पाठक इस देरी से भी बचना चाहता है। इसीलिए ई-बुक्स एवं अन्य ई-सामग्रियों के खपत में वृद्धि आई है। ई-बुक्स की बात करें तो इनकी कीमत परंपरागत किताबों से कम होती हैं। किताबों को खोजने के लिए प्रकाशनों और पुस्तक विक्रेताओं के चक्कर नहीं लगाने पड़ते। उनसे छूट के लिए दर-मोलाई नहीं करनी पड़ती। एक साथ अगर ढेर सारी किताबें खरीदनी हो तो उन्हें रखने-ढोने की समस्या नहीं होती। ई-बुक्स को जब खरीदा तभी से उसको पढ़ना संभव हो जाता है। वैसे तो काफी ई-हब्स एवं ई-पुस्तकालयों की सेवा मुफ्त है पर जहाँ कीमत है, वहाँ भी थोड़ी-सी सदस्यता शुल्क देकर हम ई-हब्स एवं ई-पुस्तकालयों में प्रवेश का अधिकार पा जाते हैं, जिससे असंख्य किताबों को देखने, पढ़ने, डाउनलोड करने की सहूलियत हो जाती है। इन ऑफलाइन किताबों को हमारे पास उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स में हजारों की संख्या में रखा जा सकता है। सिर्फ इतना ही नहीं, किताबों में मौजूद किसी विषय या शब्द को ढूंढना हो तो उसके लिए भी ढेरों पन्ने नहीं पलटने पड़ते बल्कि कुछ क्लिक्स में ही यह काम हो जाता है। डिजिटलाइजेशन ने किताबों के भौतिक अस्तित्व को बदल कर रख दिया है।

यह सच है कि हमारी पीढ़ी तक के लोगों के लिए कागज पर छपी हुई किताब के साथ वक्त बिताने का मजा ही कुछ और है। कागज पर छपी हुई किताब हमारा पहला प्यार है। किसी एकांत में बैठकर अपने महबूब के गर्म हाथों को अपने हाथों में थामकर घंटों बिता देने जैसा सुख किसी दिल-अजीज किताब को हाथों थामे हुए पाया जा सकता है। किताबों के पन्नों की सोंधी-सोंधी खुशबू, पन्नों को अँगुलियों में थामकर ताश की गड्डी फेंटने जैसी फर्र-फर्र आवाज, आधे खुले किताब को मुंह पर ढँक कर पढ़ते-पढ़ते सोचते या पढ़ते-पढ़ते सोते हुए बिताए गए असंख्य पलों की यादें हमारी पीढ़ी तक के पुस्तक प्रेमियों के अंतर्मन के बेहद करीब हैं। बेशक इन सब अनुभूतियों को साहित्य का डिजिटलाइजेशन कभी भी पूरा नहीं कर सकता पर उसने सहूलियतों के अनेकों रास्ते खोल दिए हैं। इसे झुठलाया नहीं जा सकता कि डिजिटल साहित्य ने नए युग के अनुरूप नई अभिव्यक्तियों को अवसर दिया है, नई अनुभूतियों को जगह दी है।

डिजिटल साहित्य ने आजादी, पारदर्शिता और लोकतांत्रिकता को व्यावहारिक रूप से बढ़ाया है। युवाओं की बात करें तो डिजिटल साहित्य के साथ युवा पीढ़ी का दोतरफा नाता है। युवाओं का एक रिश्ता सम्प्रेषक का है तो दूसरा रिश्ता संग्राहक का है। सम्प्रेषक और संग्राहक को, समझने की सुविधा के लिए, लेखक और पाठक कह सकते हैं; लेकिन वस्तुतः वह इनसे अधिक हैं। डिजिटल साहित्य के रचनाकार लेखक की भूमिका से आगे बढ़ चुके हैं। वे लेखक होने के साथ अपनी रचनाओं के प्रस्तुतकर्ता, संपादक, प्रकाशक, वितरक, प्रचारक आदि कई भूमिकाएँ एक साथ निभा रहे हैं। रचनाकार, रचना और रॉयल्टी के बीच के सारे मध्यस्तों को डिजिटलाईजेशन ने खारिज कर दिया है। ऐसे में रचनाकार की भूमिकाओं में भी परिवर्तन घटित हुआ है। अब रचनाकार की अभिव्यक्ति लेखन के दायरे से बाहर आकर वाचन, आवृत्ति, अभिनय, समीक्षक आदि तक फैल चुकी है। ठीक इसी प्रकार डिजिटल साहित्य का पाठक मात्र पाठक न होकर समीक्षक, आलोचक, विज्ञापक, वंचक आदि भूमिकाओं तक पसर चुका है। भूमिकाओं के इस परिवर्तन में ई-कॉमर्स, सोसल नेटवर्किंग एवं ब्लॉगिंग ने बड़ी भूमिका अदा की है।

हिंदी की बात करें तो डिजिटल साहित्य के क्षेत्र में हिंदी बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज हिंदी साहित्य की हर विधा डिजिटल साहित्य पर बड़ी मात्रा में मौजूद है। कविता-कोश, गद्य-कोश, हिंदी-समय, रेख़्ता, भारत दर्शन, पोसमपा, गर्भनाल, अभिव्यक्ति, रचनाकार, सामयिकी, अपनी माटी, अपनी हिंदी, जानकीपुल, साहित्य कुंज, हिंदी युग्म, हिंदीवार, प्रवक्ता डॉट कॉम, हिंदी नेस्ट, वेबदुनिया साहित्य, नॉट नल, 44 बुक्स जैसे हजारों वेबसाइट्स नई-पुरानी बेहतरीन साहित्यिक सामग्री उपलब्ध करवा रहे हैं। यह सारे वेबसाइट एवं ई-पोर्टल युवा रचनाकारों एवं हिंदी सेवियों की कोशिशों का परिणाम है। आज युवाओं के साथ-साथ हिंदी का लगभग हर स्थापित रचनाकार इंटरनेट पर मौजूद है। एक सर्वेक्षण के अनुसार गूगल पर हिंदी की सामग्री हर साल 95 फ़ीसदी बढ़ रही है।

लेकिन फिर भी हिंदी भाषा, साहित्य, साहित्यकार एवं पाठकों में से एक बड़ा वर्ग डिजिटल साहित्य का आलोचक है। इसकी अपनी वजहें भी हैं। हिंदी वाले डिजिटल साहित्य के विपक्ष में और भी तर्क देतें हैं कि-

- जितने समय में डिजिटल उपकरणों एवं तरीकों को सीखेंगे उतने समय में बहुत कुछ लिख सकेंगे।
- हाथ से लिखकर रचने का सुख डिजिटल लेखन में नहीं है।
- साहित्य लेखन के लिए डिजिटल शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है इसलिए डिजिटल की ओर क्यों जाना?
- डिजिटल साहित्य के माध्यम एवं गैजेट्स हिंदी भाषा के लिए ठीक से नहीं बने हैं।
- डिजिटल साहित्य भारतीय संस्कृति और हिंदी की भाषिक संस्कृति के लिए खतरा है
- डिजिटल साहित्य में लेखक और पाठक के बीच से संपादक की जगह खारिज हो जाने की वजह से साहित्यिक जिम्मेदारी, नैतिकता और विवेक की कमी आई है।
- हिंदी साहित्य में लिखित पहले का सारा साहित्य डिजिटल माध्यम में उपलब्ध नहीं है इसीलिए डिजिटल की ओर जाना उचित नहीं है।

वैसे यह सारे तर्क एकदम से निराधार भी नहीं हैं। अकादमिक जगत में डिजिटल साहित्य को अभी उस रूप में स्वीकार नहीं किया गया है जिस रूप में से इसे आम लोगों के बीच में स्वीकार्यता मिली है। इसके अपने कारण भी हैं।

अकादमिक जगत में ई-साहित्य की विश्वसनीयता के कम होने के कुछ कारण हैं। सबसे पहला कारण तो यह है कि साहित्य के नाम पर ई-साहित्य के रूप में जो कुछ भी परोसा जा रहा है उन सब को सही मायनों में साहित्य नहीं कहा जा सकता है। सामग्रियों में कहीं तथ्य गलत हैं, कहीं तर्क गलत हैं, कहीं नौसिखुआ लेखन है, कहीं अनर्गल प्रलाप है। साहित्यिक समझ, नैतिकता, आदर्शों एवं मूल्यबोध का मसला तो है ही। ई-साहित्य में प्रदत्त सारी सूचनाओं सही नहीं होतीं। तथापि जो सजग पाठक हैं वह थोड़ी बहुत खोजबीन करके उचित और अनुचित सामग्री के बीच फर्क कर पाते हैं। पर आम लोगों के मामले में यह इतना आसान नहीं होता।

डिजिटल साहित्य ने साहित्य लिखने से लेकर साहित्य का पाठकों तक पहुंचने के बीच के सारे बिचौलियों को खारिज कर दिया है। ऐसे में प्रकाशन की प्रक्रिया ने गति पाई है। लेखक प्रकाशन के मामले में आजाद हो गया है। उसके पास अभिव्यक्ति के ढेरों संसाधन मौजूद हैं। और इसी वजह से रचनाकारों के बीच अभिव्यक्ति की हड़बड़ी भी पैदा हुई है। हड़बड़ी में साहित्यकार के भीतर विषय को पकने का वो समय नहीं मिलता जितनी की जरूरत होती है। ऐसे में दूसरी समस्या यह पैदा होती है कि एक ही सामग्री चुराकर लोग उसमें अपना नाम चस्पा कर खुद को लेखक बता देते हैं। यह लेखकीय नैतिकता और मर्यादा के साथ कॉपीराइट कानून का भी उल्लंघन है। ऐसे में सामग्री की मौलिकता को लेकर सदा संदेह बना रहता है। यद्यपि, यह संदेह परंपरागत पुस्तकों के मामले में भी है। ई-साहित्य को लेकर के तीसरी समस्या शोध क्षेत्र की है। शोध कार्य में संदर्भ लेखन के लिए अगर ई-साहित्य का प्रयोग किया गया है तो कई बार संदर्भ के स्रोत सामग्री का पता देने में कठिनाई होती है। मसलन अगर कोई किताब किंडल या अन्य वेबसाइट्स पर ई-बुक के रूप में है तो पृष्ठ संख्या के देने में समस्या होती है। क्योंकि किंडल या वेबसाइट्स पर फॉन्ट की आकृति को अपनी सहूलियत के हिसाब से बड़ा या छोटा कर देने से पृष्ठ संख्याएं कम या अधिक हो सकती हैं। ऐसे में संदर्भ कैसे लिखा जाए यह थोड़ा मुश्किल है।

डिजिटल साहित्य ने पाठकों को भी मनचाहे विषयों एवं बिंदुओं का पाठन आस्वादन का क्षेत्र तैयार किया हैं। पर यह स्वीकार करना होगा कि इन सबके बीच गुणवत्ता और नैतिकता के पक्ष की उपेक्षा नहीं की जा सकती। डिजिटलाइजेशन ने लेखन और प्रकाशन की गति बढ़ाई है। इस कारण कथ्य और शिल्प की गुणवत्ता में कमी आयी है। रचनाकार की अपेक्षाकृत रचनात्मक प्रौढ़ता में कमी आई है। अच्छी किताबों और बुरी किताबों के बीच अंतर कर सकने के विवेक में कमी आई है और व्यक्तिगत गोपनीयता को लेकर बिग डेटा के खतरे भी बने हुए हैं।

अंग्रेजी कहावत है- "ओल्ड इज गोल्ड।" पुरातन के प्रति एक मोह होता है। पुरानी चीजें हमारी स्मृतियों का हिस्सा होती हैं। हम जब भी पुरानी बातों को याद करते हैं तो नॉस्टैल्जिक हो जाते हैं। इस नजर से डिजिटल साहित्य की तुलना में परंपरागत साहित्य हमारे दिल के करीब है। हम चाहे जितना भी डिजिटल साहित्य का प्रयोग करें पर कहीं ना कहीं हमारे भीतर यह बात है कि डिजिटल साहित्य गुणवत्ता के मामले में परंपरागत साहित्य से कमतर है। पहले बुक टू बुक बात होती थी अब फेसबुक टू फेसबुक बात होती है। चाय पीते हुए साहित्य चर्चाएं होती थी अब चाय पर चर्चा नाम से व्हाट्सएप ग्रुप बनाए जाते हैं। पहले चौपाल पर बैठकियाँ हुआ करती थी अब चौपाल नाम से डिजिटल फोरम बना करते हैं। लेकिन हम चाहे जितना नॉस्टैल्जिक हो लें वर्तमान को दरकिनार और भविष्य को नकार नहीं सकतें। युवा देश भारत की अधिकांश युवा आबादी डिजिटल रूप से सक्रिय है। इसीलिए साहित्य का डिजिटल आयाम में आगे बढ़ना बिल्कुल तय है। शमशेर बहादुर सिंह ने अपनी एक कविता में कहा था-

"बढ़ो जिस सिम्त में,
उसकी ही सीमा बढ़ती जाती है ! !"
# # #
तबीयत जैसी बन जाती है,
फिर बनती ही जाती है;"[5]

हमारी युवा पीढ़ी डिजिटलाइजेशन के रास्ते पर बढ़ चुकी है। अब हमारा पीछे लौटना मुश्किल है। बशर्ते कि दुनिया तबाह हो जाए, भयंकर तीसरा विश्वयुद्ध हो जाए, सौर विकिरण के तूफान आ जाए, सारी दुनिया की बिजली चली जाए, बत्ती गुल हो जाए, सारे सर्वर बैठ जाए, सारे सेटेलाइट्स खत्म हो जाए, दुनिया के सारे गैजेट्स ठप्प पड़ जाए। अगर

ऐसी स्थितियाँ आ जाए तो शायद हम परंपरागत तौर तरीकों की ओर फिर से लौट आएँगे। लेकिन अगर ऐसा नहीं होता है तो हम डिजिटलाइजेशन के रास्ते में आगे बढ़ते हुए नए-नए आयामों में प्रवेश करते जाएँगे। धीरे-धीरे पुस्तकों का भौतिक अस्तित्व कम होता जाएगा। आगे चलकर लोगों के पास मौजूद संयन्त्रों (गैजेट्स) में असीमित पुस्तकों का संग्रह संभव होगा। हर गैजेट आज के दौर में मौजूद दुनिया की सबसे बड़े पुस्तकालयों में रखी किताबों से भी कई गुना अधिक किताबों को हथेली पर ला कर रख देगा। यह भी सम्भव है कि आगे चलकर 3D, 4D आदि नए आयामों एवं अनुभवों से संपृक्त किताबें उपलब्ध होंगी। और इसी के साथ चीजों को अनुभव करने के पुराने तरीकों के बनिस्बत नए आसान, तेज और आकर्षक तरीके ईजाद होते जाएँगे। साहित्य निश्चित तौर पर इससे अछूता नहीं रहेगा। ऐसे में हमें नए तकनीकों एवं माध्यमों का प्रयोग करने के लिए अपने दिल-ओ-दिमाग को खोलना पड़ेगा। हमें आधारभूत डिजिटल साक्षरता (Basic Digital Literacy) अवश्य अर्जित करनी पड़ेगी। वरना नई पीढ़ी के द्वारा पीछे फेंक दिए जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

लोगों को हमेशा यह डर सताते रहता है कि डिजिटल साहित्य हिंदी के पाठकों की संख्या और परंपरागत पुस्तकों की बिक्री को कम कर देगा। लेकिन यह बात पूर्णतः सच नहीं है। प्रकाशकों के हवाले से बात करें तो डिजिटल माध्यमों ने पठनीयता को बढ़ाया है। बड़े प्रकाशन घरानों के एकाधिकार को कम किया है लेकिन किताबों की बिक्री में कमी होने के बजाय बढ़ोतरी हुई है।

डिजिटल साहित्य संरचना में जितना भी अंतर लाए परन्तु क्लासिक साहित्य एवं क्लासिक स्तर के रचनाकारों की अनिवार्यता हमेशा बनी रहेगी। नये तरह के तकनीकी अनुभूतियों के साथ किताबों की पठनीयता में वृद्धि होती रहेगी। पाठकवर्ग तेजी से बदल रहा है। लेखकों को भी बदलना पड़ेगा। प्रकाशकों को भी समयानुसार नए संसाधनों एवं उपायों की ओर बढ़ना होगा। बहुत लोग आगे बढ़ चुके हैं बहुतों का बढ़ना अभी भी बाकी है।

जब हिंदी के आधुनिक युग की शुरुआत हुई थी तब उस समय के एक निबंधकार बालमुकुंद गुप्त ने एक अंग्रेज गवर्नर लॉर्ड कर्जन को हिंदी साहित्यकारों को उपेक्षित करने के खातिर एक व्यंग्य निबंध लिखा, जिसका शीर्षक था- 'पीछे मत फेंकिए'। आज हिंदी साहित्य के डिजिटल युग की शुरुआत हो चुकी है ऐसे में बालमुकुंद गुप्त की बात को याद करते हुए हमें खुद को खुद के लिए कहना पड़ेगा कि- 'पीछे मत फेंकिए'।

संदर्भ :

1. लेख **:** Digital Literature (https://www.twinkl.co.in/teaching-wiki/digital-literature)
2. "connected by computer to one or more other computers or networks, as through a commercial electronic information service or the internet." **(**https://www.dictionary.com/browse/online**)**
3. प्रसाद, डॉ. धनजी, लेख- डिजिटल हिंदी : स्वरूप एवं संभावनाएँ**,** *Annals of Multi-Disciplinary Research, ISSN 2249–8893, Volume VI, Issue 4.12.2016, पृ. 336-340* **(**https://lgandlt.blogspot.com/2017**/**11**/**blog-post.html?m=1**)**
4. लेख **:** वेब मीडिया ने बढ़ाया हिंदी का दायरा, अमर उजाला, नई दिल्ली, 20.09.2016 (https://www.amarujala.com/amp/india-news/role-of-web-media-in-development-hindi**)**
5. सिंह, शमशेर बहादुर, काल तुझसे होड़ है मेरी, वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली, सं. 2002, पृ-30

❍